यह फगुआ लोकजीवन की मनोरम झांकी प्रस्तुत करता है-

'अवध मां होली खेलैं रघुवीरा। / ओ केकरे हाथ ढोलक भल सोहै, केकरे हाथे मंजीरा। / राम के हाथ ढोलक भल सोहै, लछिमन हाथे मंजीरा। / ए केकरे हाथ कनक पिचकारी, केकरे हाथे अबीरा। / ए भरत के हाथ कनक पिचकारी शत्रुघन हाथे अबीरा।'

राम के वन गमन के पश्चात दुखी मां कौशल्या घर में सगुन करवा रही हैं कि रामचन्द्र कब आयेंगें और

उधर श्रीराम वन में अपना फागुन व्यतीत करने को विवश हैं।

घरहीं कोशिला मैया करेली सगुनवा,
बने बने राम जी का बीतेला फगुनवा।

आज भी अवध प्रदेश में यह उन मांओं का प्रिय फगुआ है जिनके पुत्र परदेस में हैं और कभी होली में घर नहीं आ पाते हैं तो वह यह फगुआ अवश्य गाती हैं।

इधर मिथिला में भी मैथिली फगुआ में श्रीराम मिथिला में होली खेल रहे हैं और सब ओर आनंद के रंग बरस रहे हैं-

मिथिला में राम खेलथि होरी, मिथिला में / अभिर, गुलाल, कुमकुमा केसर / सखियन के शोभे नक बेसर / हाथ लले अबीरत झोरी रे / मिथिला में रामा खेलथि होरी।

राजस्थान की होली की बात ही कुछ और है। मारवाड़ और मेवाड़ से लेकर शेखावटी में होली मनाने का अलग और खास अंदाज है। पुरुष गेर निकालकर फाग गीत गाते हैं, तो औरतें लूर गाती है। गेर पुरुषों द्वारा किए जाने वाला एक पारंपरिक नृत्य है। इसमें चंग, मजीरों आदि लोक वाद्यों की ताल पर फागण के गीत गाए जाते हैं, गेर नृत्य किया जाता है। होली में पत्नी अपने परदेस गए पिया से कि अबके फागुन में पीला लहंगा उपहार में लेकर जल्दी घर आना कुछ लेकर आना:

फागण में आवो तो परण्या पीलो लहंगो लाइजे रे / पीलो लहंगो लाय वापर मोर मंडाइ जेरे / परण्या बेगो आ....

उत्तर प्रदेश और बिहार के भोजपुरी क्षेत्र में जहां एक ओर जहां 'जोगीरा सारा रा रारा...' की सामूहिक ध्वनि होली की उमंग को चरमोत्कर्ष प्रदान करती हैं वहीं कोई विरहिणी पत्नी होली में तड़प कर गा उठती है:

होली का संग खेलूं, बालम हमरो बिदेस।

बुंदेलखंड में फागुन के महीने में गांव की चौपालों में लगने वाली 'फाग' की महफिलों में रंगों की बौछार के बीच गुलाल-अबीर से रंगे फगुआरों के 'फाग' जब वातावरण में गूंजते हैं तो ऐसा लगता है कि श्रृंगार रस की बारिश हो रही है और समूची प्रकृति थिरक उठी है। अनेक कंठ जब एक स्वर में गाते हैं:

राम खेले होरी, लछुमन खेले होरी, / लंका में राजा रावण खेले होरी, / अजोधा में भाई भरत

खेले होरी। / हंसेला जनकपुर के लोग सभी हो / लइका राम धनुष कैसे तुरिहें?